Yadav College Peth Vadgaon
ESTD. 1939

शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापूर, महाराष्ट्र

दूरशिक्षण केंद्र

बी. ए. भाग-२ : भूगोलशास्त्र : IDS (आंतर विद्याशाखीय विषय)

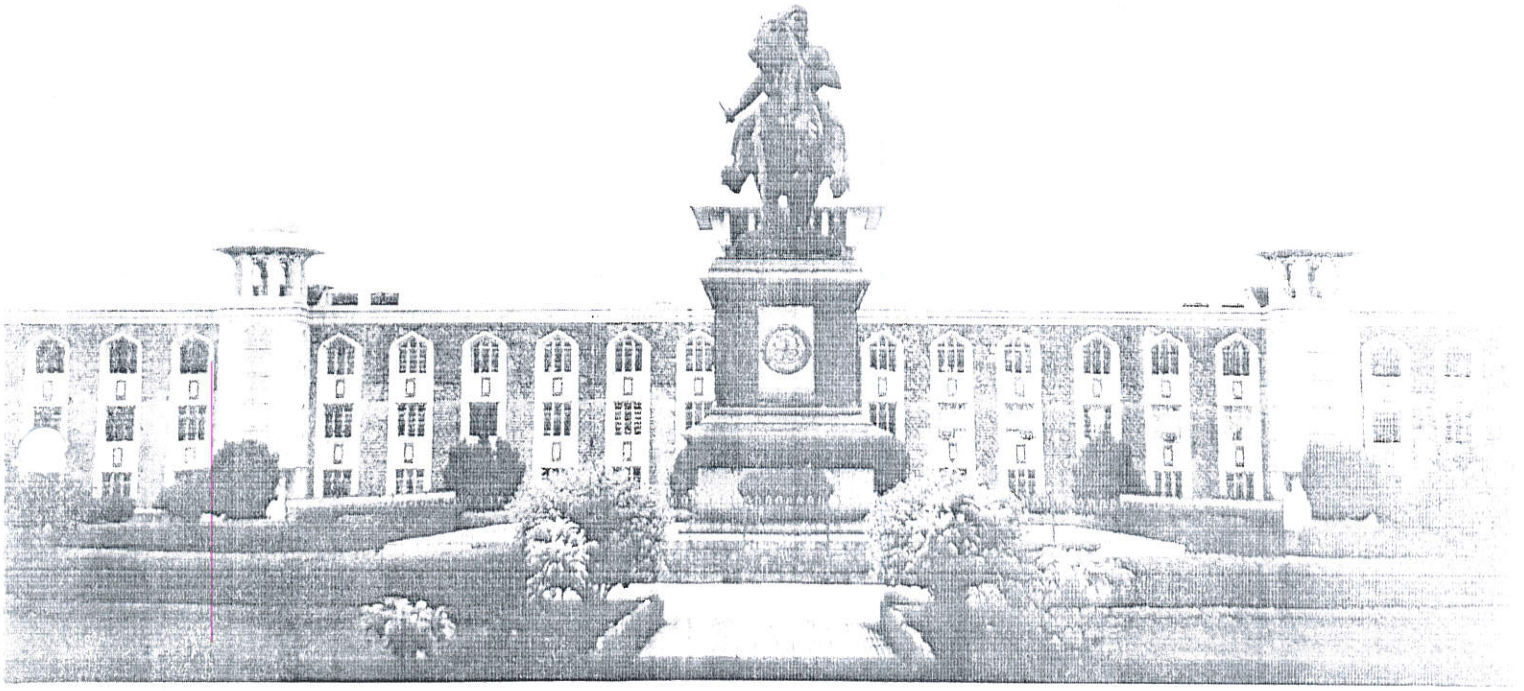

सत्र ३ : पर्यटन भूगोलमधील संकल्पना

सत्र ४ : पर्यटन विकास आणि नियोजन

(शैक्षणिक वर्ष २०२०-२१ पासून)

Shri Vijaysinha Yadav College Peth Vadgaon, Dist. Kolhapur ★ ESTD. 1999

© कुलसचिव, शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापूर (महाराष्ट्र)
प्रथमावृत्ती : २०२१
बी. ए. (पर्यटन भूगोलमधील संकल्पना/पर्यटन विकास आणि नियोजन) भाग-२ IDS
सर्व हक्क स्वाधीन. शिवाजी विद्यापीठाच्या परवानगीशिवाय कोणत्याही प्रकारे नक्कल करता येणार नाही

प्रती : २००

प्रकाशक :
डॉ. व्ही. डी. नांदवडेकर
कुलसचिव,
शिवाजी विद्यापीठ,
कोल्हापूर - ४१६ ००४.

मुद्रक :
श्री. बी. पी. पाटील
अधीक्षक,
शिवाजी विद्यापीठ मुद्रणालय,
कोल्हापूर - ४१६ ००४.

ISBN- 978-81-951367-1-1

★ दूरशिक्षण केंद्र आणि शिवाजी विद्यापीठ याबद्दलची माहिती पुढील पत्त्यावर मिळू शकेल.
शिवाजी विद्यापीठ, विद्यानगर, कोल्हापूर-४१६ ००४ (भारत)

दूरशिक्षण केंद्र,
शिवाजी विद्यापीठ,
कोल्हापूर

पर्यटन भूगोलमधील संकल्पना
पर्यटन विकास आणि नियोजन [illegible]

Shri Vijaysinha Yadav College Peth Vadgaon
ESTD. 1999

अभ्यास घटकांचे लेखक

लेखक	घटक क्रमांक
सत्र–३ : पर्यटन भूगोलमधील संकल्पना	
प्रा. (डॉ.) ए. बी. पाटील श्रीमती कुसुमताई राजारामबापू पाटील कन्या महाविद्यालय, इस्लामपूर	१
प्रा. (डॉ.) एस. डी. शिंदे प्रमुख, भूगोलशास्त्र अधिविभाग, शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापूर	२
डॉ. व्ही. आर. वीर किसनवीर महाविद्यालय, वाई, ता. वाई, जि. सातारा	३
डॉ. टी. जी. घाटगे प्लॉट नं. ३०, विकास कॉलनी, लक्ष्मी रोड १४ वी गल्ली, जयसिंगपूर, ता. शिरोळ, जि. कोल्हापूर	४
सत्र–४ : पर्यटन विकास आणि नियोजन	
डॉ. सी. यु. माने बाळासाहेब देसाई कॉलेज, पाटण, ता. पाटण, जि. सातारा	१
डॉ. डी. जे. भंडारे श्री विजयसिंह यादव कॉलेज ऑफ आर्टस ॲण्ड सायन्स, पेठवडगांव	२
डॉ. मिना पोतदार भूगोलशास्त्र अधिविभाग, शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापूर	३
प्रा. (डॉ.) एस. डी. शिंदे प्रमुख, भूगोल अधिविभाग, शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापूर	४

■ संपादक ■

प्रा. (डॉ.) ए. बी. पाटील
श्रीमती कुसुमताई राजारामबापू पाटील
कन्या महाविद्यालय, इस्लामपूर

डॉ. सी. यु. माने
बाळासाहेब देसाई कॉलेज पाटण,
ता. पाटण, जि. सातारा

Shri Vijaysinha Yadav College Peth Vadgaon, Kolhapur ★ ESTD. 1999

हिंदी फिल्मों के उर्दू गीतकार

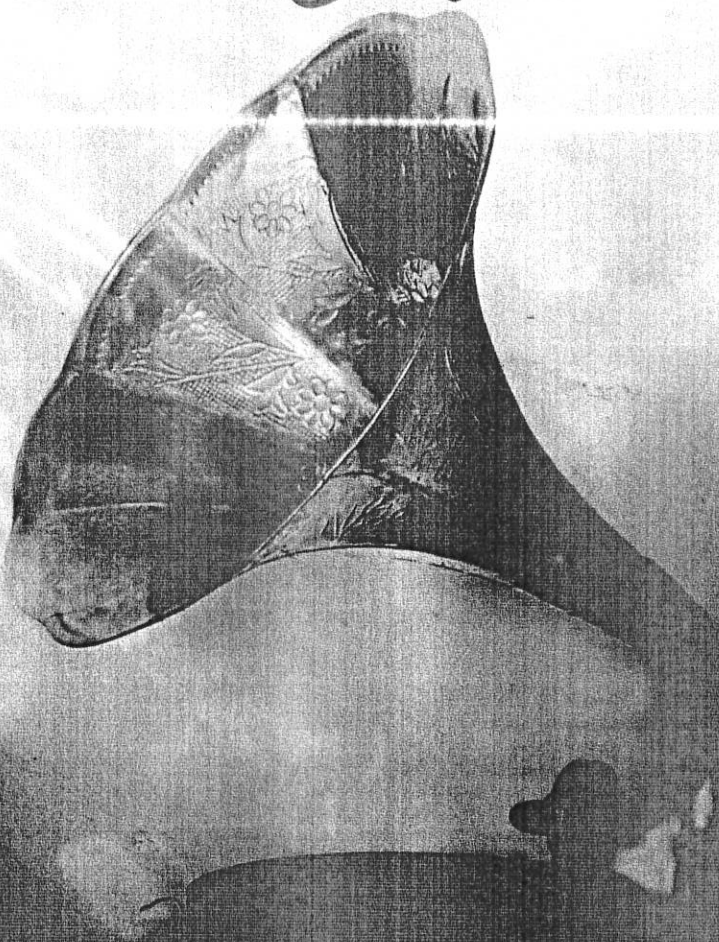

डॉ. नाज़िम शेख

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक या इसके किसी भी अंश का किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुर्नप्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता, इसे संक्षिप्त, परिवर्धित कर प्रकाशित करना कानूनी अपराध है।

ISBN : 978-93-92417-00-9

प्रथम संस्करण 2021

© लेखकाधीन

पुस्तक : हिंदी फिल्मों के उर्दू गीतकार

लेखक : डॉ. नाज़िम शेख

प्रकाशक : शुभम् पब्लिकेशंस

3ए-128, प्रथम तल, हंसपुरम्, कानपुर-208021 (उ.प्र.)

सम्पर्क : 09415731903, 09452971407

Email : shubhampublicationskanpur@gmail.com

website : www.shubhampublications.com

मूल्य : 495/-

शब्द-सज्जा : रुद्र ग्राफिक्स, हनुमन्त विहार, नौबस्ता, कानपुर-21

मुख्य पृष्ठ सज्जा : अन्वर हुसैन

मुद्रण : आर्यन डिजिटल प्रेस, नई दिल्ली

Yadav College Peth Vadgaon
ESTD.

विद्यापीठ अनुदान आयोगाच्या नेट/सेट(मराठी) च्या सुधारीत अभ्यासक्रमानुसार लिहिलेला, मराठी विषयाच्या विविध विद्यापीठांच्या पदवी, पदव्युत्तर तसेच एम्.पी.एस्.सी., यु.पी.एस्.सी. परीक्षांसाठी उपयुक्त असा ग्रंथ

वस्तुनिष्ठ मराठी

सेट/नेट पेपर क्र. २

डॉ. प्रशांत गायकवाड

एम्.ए., बी.एड्., सेट, नेट(मराठी), एम्.फिल, पीएच.डी

जयश्री शिंदे

एम.ए., सेट, नेट(मराठी), पीएच.डी(रजि.)

लोकायत प्रकाशन

Vidyasinha Yadav College ... ESTD. 1999

सेट/नेट पेपर क्र. २

वस्तुनिष्ठ मराठी

Vastunishta Marathi

डॉ. प्रशांत गायकवाड
जयश्री शिंदे
Dr. Prashant Gaikwad
Jayashri Shinde

प्रथमावृत्ती : एप्रिल, २०२१

सर्व हक्क : लेखकाधीन

I.S.B.N. : 978-81-952346-2-2

प्रकाशक :
राकेश आण्णासाहेब साळुंखे
लोकायत, १३, यशवंतनगर,
गेंडामाळ, सातारा - ४१५००२
भ्रमणध्वनी : ८४८४९७७८९९
ई-मेल : lokayatprakashan@yahoo.com
वेब साईट: www.lokayatprakashan.com

मुद्रक व संगणक :
भारती मुद्रणालय
८३२ ई, शाहूपुरी ४ थी गल्ली,
कोल्हापूर ४१६००१
फोन: (०२३१) २६५४३२९

मुखपृष्ठ :
कलाविष्कार ग्राफीक्स

मूल्य : रु. ४५०/- 500/-

या पुस्तकाचे सर्व हक्क सुरक्षित आहेत. या पुस्तकातील माहिती अचूक व अद्यायावत देण्याचा प्रयत्न केला आहे. तरीही, वाचकांनी काही त्रुटी किंवा उणिवा दाखवून दिल्यास पुढील आवृत्तीत त्यांचा नक्कीच विचार केला जाईल. यातील संकलित केलेल्या माहितीस लेखक, प्रकाशक जबाबदार नाहीत याची कृपया नोंद घ्यावी.

संदर्भ –

१. अच्युत गोडबोले, 'थैमान चंगळवादाचे', साधना प्रकाशन, पुणे, तिसरी आवृत्ती, जुलै २०१२, पृष्ठ क्र. १६

साधन ग्रंथ –

१. डॉ. ह. वि. सरदेसाई, सौ. सरिता भावे, 'मानसिक ताण आणि वार्धक्य', श्रीविद्या प्रकाशन, पुणे, प्रथमावृत्ती, जानेवारी २००४

२. डॉ. विजया फडणीस, 'गोष्टी मनाच्या', श्रीवत्स प्रकाशन, पुणे, प्रथमावृत्ती, जुलै २०१४

३. अच्युत गोडबोले, नीलंबरी जोशी, ''मनकल्लोळ'', मनोविकास प्रकाशन, पुणे, आठवी आवृत्ती फेब्रुवारी २०१७

४. अच्युत गोडबोले, ''थैमान चंगळवादाचे'', साधना प्रकाशन, पुणे, आ. तिसरी, जुलै २०१२

□□□

महात्मा जोतिराव फुले यांच्यासाहित्यातून दिसणारी बदलती विचारधारा व मानसिकता

प्रा.रामचंद्र उत्तम ढवळे
विजयसिंह यादव महाविद्यालय,पेठवडगाव, जि.कोल्हापूर

****

प्रस्तावना

महात्मा जोतिराव फुले हे सर्वांगीणक्रांतीचे पहिले भारतीय क्रांतिकारी पुढारी होते.त्यांनी दीनदलित समाजासाठी आयुष्यभर कार्य केले.महात्मा फुले हे सामान्यातील असले तरी विचार व कर्तुत्वाने थोर होते. सामाजिक समतेसाठी त्यांनी शूद्रातिशद्रांना संघटित करण्याचे प्रयत्न केले.बहुजन समाजाच्या शिक्षणासाठी ते अविरतपणे लढले.त्यांचे व्यक्तिमत्व कर्तेपुरूषाचे असून विकसनशील होते.ग्रंथपांडित्यापेक्षा समाज प्रवाहातील चांगल्या वाईट प्रवृत्तींचा अन्वयार्थ लावण्याचा त्यांनी प्रयत्न केला.महाराष्ट्राचे समाजिक प्रबोधन म. फुलेंनी वेगळयापध्दतीने केले.त्यामध्ये स्त्रिया व अस्पृश्य यांच्या उध्दारासाठी त्यांनी अहोरात्र प्रयत्न केले,हे कार्य करीत असताना म.फुलेंना अनेक संकटांना तोंड दयावे लागले,तरीही थोडेही विचलित न होता,आपले कार्य अविरपणे त्यांनी सुरू ठेवले.अशा या महान क्रांतीकारांच्या विचाराची आजच्या बदलत्या काळात गरजचे आहे. त्याबाबतची त्यांची वैचारिक भूमिका व मानसिकता महत्वाची आहे.

ध्येय व उदिष्टे :.

१. महात्मा फुले यांच्या कार्याचा आलेख तपासणे.

२. महात्मा फुले यांच्या साहित्यातील वास्तवता वाचकांपुढे मांडणे.

३. महात्मा फुले यांची शिकवण प्रत्येक

20.2

हिन्दी के शैक्षिक और भौगोलिक सन्दर्भ

सम्पादक
घनश्याम शर्मा

TRUE COPY
Librarian
Shri. Vijaysinh Yadav College
Peth Vadgaon, Tal. Hatkanangale
Dist. Kolhapur.

Vijaysinha Yadav College Peth Vadgaon, Dist. Kolhapur * Sini. ESTD. 1969

अनुज्ञा

बैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन, फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक व प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित आलेख/आलेखों के सर्वाधिकार मूल रचनाकार/रचनाकारों के पास सुरक्षित हैं। पुस्तक में व्यक्त विचार पूर्णतया लेखक/लेखकों अथवा संपादक/संपादकों के हैं। यह जरूरी नहीं है कि प्रकाशक इन विचारों से पूर्ण या आंशिक रूप से सहमति रखे। किसी भी विवाद के लिए न्यायालय दिल्ली ही मान्य होगा।

© लेखक

प्रथम संस्करण : 2020

ISBN 978-93-89341-22-5

प्रकाशक

अनुज्ञा बुक्स

1/10206, लेन नं. 1E, वेस्ट गोरख पार्क, शाहदरा, दिल्ली-110 032

e-mail : anuugyabooks@gmail.com • salesanuugyabooks@gmail.com

फोन : 011-22825424, 09350809192

www : anuugyabooks.com

मूल्य : 600 रुपये

आवरण

मीना-किशन सिंह

मुद्रक

अर्पित प्रिंटोग्राफर्स, दिल्ली-32

HINDI KE SHAIKSHIK AUR BHAUGOLIK SANDARBH

Hindi Language Teaching edited by Dr. Ghanshyam Sharma

आमुख

अगर हिंदी भाषा के इतिहास को दुनिया की प्रमुख भाषाओं के इतिहासों के साथ रखकर देखा जाए तो पता चलता है कि पिछली दो सदियों में हिंदी भाषा को समृद्ध बनाने और प्रतिष्ठा दिलाने में हिंदी लेखकों और संस्थाओं का जो योगदान रहा है वह सचमुच ही अद्भुत है। आज देश और विदेशों के विश्वविद्यालयों में हिंदी के जिस मानक रूप को पढ़ाया जाता है उसका निर्माण वास्तव में हिंदी लेखकों ने ही किया। हिंदी लेखकों के प्रयासों के फलस्वरूप ही हमें इस भाषा का वह रूप मिला जिसे हम आज गर्व के साथ अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा प्रदान कराने के लिए प्रयासरत हैं। भारत में राजनीतिक दृष्टि से हिंदी की स्थिति आने वाले वर्षों में चाहे जैसी बने, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इसे निर्विवाद रूप से भारत की एक समृद्ध भाषा के रूप में जाना जाता है। फिर भी हिंदी के विकास के लिए अभी बहुत काम बाकी है। हमारा मानना है कि राजनीतिक स्तर पर किए गए सभी प्रशंसनीय प्रयासों के साथ-साथ हिंदी भाषा की शोध-परंपरा को जीवित बनाए रखना बहुत ज़रूरी है क्योंकि शोध के माध्यम से ही हिंदी भाषा को निरंतर आधुनिक संदर्भों के अनुकूल बनाए रखा जा सकता है। इसी उद्देश्य से फ्रांस के पेरिस स्थित राष्ट्रीय प्राच्य भाषा और सभ्यता संस्थान "इनाल्को" में सितंबर 2016 में एक अंतरराष्ट्रीय हिंदी संगोष्ठी का आयोजन हुआ। इस संगोष्ठी का मूल उद्देश्य था भारत तथा विदेशों में हिंदी भाषा पर हो रहे शोध को प्रोत्साहन देना। इसके अलावा, 5 मई 2018 को हमें इनाल्को में तेलंगाना और आन्ध्रप्रदेश से पधारे हिन्दी विद्वानों का स्वागत करने का मौका मिला। उनके सहयोग से हमने एक और लघु संगोष्ठी का आयोजन पेरिस में किया जिसका विषय था हिंदी और दक्खिनी। पेरिस हिंदी संगोष्ठी में पढ़े गए शोध-पत्रों के संकलन की चार पुस्तकें नामी प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित की जा चुकी हैं। उक्त दोनों संगोष्ठियों के कुछ चुने गए शोध-पत्रों को हमने इस पाँचवीं पुस्तक में सम्मिलित किया है।

पुस्तक में संकलित ज़्यादातर लेख मातृभाषा, द्वितीय भाषा तथा विदेशी भाषा के रूप में हिंदी-शिक्षण के संदर्भों की विवेचना करते हैं। प्रोफ़ेसर गोस्वामी की स्थापना है कि शिक्षा का माध्यम मातृभाषा ही होनी चाहिए क्योंकि मातृभाषा एक सामाजिक यथार्थ होती है जो व्यक्ति को अपने भाषायी समाज के अनेक सामाजिक संदर्भों से जोड़ती है और उसकी सामाजिक अस्मिता का निर्धारण करती है। मातृभाषा

Shri Vijaysinha Yadav ... Dist. Kolhapur ... ESTD. 1959

हिन्दी को विश्वभाषा बनाने में इंटरनेट का प्रदेय

वर्षाराणी सहदेव

किसी भी भाषा के विकास में जनसंचार माध्यमों की भूमिका महत्त्वपूर्ण सिद्ध होती है। इस दृष्टि से हिन्दी भाषा के विकास में भी आधुनिक जनसंचार के माध्यम जैसे रेडियो, टी.वी., मोबाईल, दैनिक पत्र, समाचार पत्र-पत्रिकाएँ, सिनेमा, टेलीफोन, टेलीफैक्स, कम्प्यूटर और इंटरनेट आदि ने भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। सूचना प्रौद्योगिकी के इस विकसित होते हुए युग में ई-जर्नलिज्म, ई-लाइफ, ई-ट्रेनिंग, ई-एज्युकेशन, ई-गवर्नन्स आदि के कारण ई-युग का प्रारम्भ हो चुका है। ऐसी स्थिति में हिन्दी को विकसित कर विश्वभाषा बनाने के लिए इंटरनेट महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इंटरनेट के कारण ही विश्व सिमटकर एक गाँव बन चुका है, अब दूरी किसी कार्य में बाधक नहीं रह गई है।

किसी भी भाषा के विकास की अवस्थाओं का अध्ययन करने से पता चलता है कि भाषा का विकास बोली, विभाषा, राजभाषा, राष्ट्रभाषा तथा विश्वभाषा जैसी दिशाओं में होता है। इस दृष्टि से हिन्दी अब सम्पर्क की प्रमुख भाषा बन चुकी है। उसे अब विश्वभाषा का दर्जा प्राप्त करना है, जब वह संयुक्त राष्ट्र संघ की सर्वमान्य भाषाओं में अपनी उपस्थिति दर्ज करा पाएगी तब हम सही अर्थ में उसे विश्वभाषा कह सकेंगे। हिन्दी को विश्वभाषा बनाने में अनेक माध्यम सहायक सिद्ध हो रहे हैं; तथापि इंटरनेट का योगदान महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगा। प्रस्तुत आलेख में हिन्दी को विश्वभाषा बनाने में इंटरनेट का प्रदेय कितना रहा और आगे कितना उपयुक्त हो सकता है इन्हीं बातों की विवेचना की गई है। 21वीं सदी सायबर का युग है, जिसमें सभी माध्यम कम्प्यूटर के साथ जुड़ चुके हैं। कम्प्यूटर, लैपटॉप, इलेक्टानिक डायरी कोई भी साधन इंटरनेट के सिवा अधूरे लगते हैं, और यही इंटरनेट विश्वभर में घर घर पहुँच चुका है। ऐसे में हिन्दी अगर तकनीक की भाषा बन जाए तो उसे विश्वभाषा बनने में देर नहीं लगेगी। इस दृष्टि से प्रयास हो रहे हैं लेकिन क्या वे पर्याप्त हैं अथवा नहीं इसकी पहल प्रस्तुत आलेख का प्रधान उद्देश्य है।

इंटरनेट पर हिन्दी का प्रयोग वैसे अपेक्षा से कम है लेकिन दिन ब दिन इसके प्रयोक्ताओं की संख्या बढ़ रही है, यही हर्ष की बात है। वर्तमान समय में हिन्दी को

वैश्विक सन्दर्भ प्रदान करने में उसके बोलने वालों की संख्या, हिन्दी फ़िल्में, पत्र पत्रिकाएँ, विभिन्न हिन्दी चैनल, विज्ञापन एजेंसियाँ, उसका विश्वस्तरीय साहित्य तथा साहित्यकार सभी का विशेष प्रदेय है। इसके अतिरिक्त हिन्दी को विश्वभाषा बनाने में इंटरनेट की भूमिका भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। हिन्दी अपने आप में परिपूर्ण है– विन्यास की दृष्टि से, ग्राह्यता की दृष्टि से, प्रयोजन की दृष्टि से तथा प्रयोग की दृष्टि से भी हिन्दी हर रूप में सक्षम है। इस सुबोध सरल, सशक्त, भाषा को आवश्यकता है तन्त्रज्ञान की भाषा के रूप में नई आवश्यकताओं के अनुरूप तकनीकी क्षेत्र में इसके प्रयोग को बढ़ावा देने की। इस सम्बन्ध में डॉ. अर्जुन चव्हान का कथन दृष्टव्य है–

"आज हमें हिन्दी को आई.टी. की भाषा बनाने की चुनौती स्वीकरनी होगी। सूचना एवं प्राद्योगिकी तथा विज्ञान विषयक सामग्री को हिन्दी में देना होगा– पढ़ेगा कौन इसकी चिन्ता किए बिना।"[1]

इंटरनेट का प्रयोग लगभग चार दशकों से हो रहा है। सर्वप्रथम अमेरिका के कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय में इसका प्रारम्भ किया गया। अमेरिका की रक्षा अनुसंधान परियोजना एजेंसी ने आपसी सूचनाओं का आदान-प्रदान करने के लिए यह क्रान्तिकारी पहल की। इससे प्रेरित होकर विश्व की कई प्रख्यात कम्प्यूटर कंपनियों ने इस दिशा में पहल की और सम्पूर्ण विश्व की संचार व्यवस्था को आपस में जोड़ा। वैसे कम्प्यूटर की अपनी कोई एक ही भाषा नहीं होती, फिर भी कम्प्यूटर पर हिन्दी बहुत जल्दी स्वीकृत हो रही है, क्योंकि देवनागरी लिपि ध्वनियों पर आधारित लिपि है। अर्थात् जैसे वह लिखी जाती है वैसे ही बोली भी जाती है। वैज्ञानिक ढंग से विकसित एवं वर्गीकृत होने के कारण इसके सभी वर्णों का उच्चारण सुनिश्चित है। **'क'** का उच्चारण **'क'** ही होता है। तथा **'क'** की ध्वनि को बतलानेवाला भी एक वर्ण है **'क'**। कम्प्यूटर पर यूनिकोड ने प्रत्येक अक्षर के लिए एक विशेष नंबर प्रदान किया है। किसी भाषा से इसमें कोई अन्तर नहीं आता। इसे सभी कम्प्यूटर कंपनियों ने अपनाया है, इसलिए हिन्दी अब कम्प्यूटर के माध्यम से कहीं पर भी विश्व में पढ़ी जा सकती है। वर्णमाला के स्वरों, मात्राओं, व्यंजनो के लिए स्वतन्त्र कुंजियाँ बनाई गई हैं। बावजूद इसके कुछ कमियाँ आज भी हैं। हिन्दी में फॉण्ट और की-बोर्ड ले आऊट के मानकीकरण का आधारभूत काम होना चाहिए। इस सम्बन्ध में आर. अनुराधाजी का मत युक्ति संगत लगता है–

"अब भी कई महत्त्वपूर्ण सॉफ्टवेयर है जिन पर यूनिकोड आधारित फॉण्ट काम नहीं करते क्वार्क ऐडोबी के बनाए पेजमेकर आदि आज भी यूनीकोड आधारित मंगल जैसे फॉण्ट के उपयुक्त नहीं है इनमें कृतिदेव, चाणक्य, जैसे फॉण्ट से ही काम चलाना पड़ता है ऐसे मौकों के लिए फॉण्ट कनवर्टर भले ही विकसित कर लिये

समकालीन कवयित्रियों के काव्य में स्त्री-स्वर

डॉ. वर्षा सहदेव

एबीएस बुक्स
पब्लिशर्स, एक्सपोटर एण्ड ऑनलाइन बुक स्टोर
बी-21, शिव कॉलोनी, बुद्ध विहार
फेस-2, दिल्ली- 110086
मोबाइल : +919999868875, +919999862475
ईमेल : absbooksindia@gmail.com
वेबसाइट : wwwabsbooksindia.com

समकालीन कवयित्रियों के काव्य में स्त्री स्वर

© लेखिका

संस्करण : 2022

ISBN : 978-93-91002-58-9

पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग करने के लिए प्रकाशक से लिखित अनुमति अनिवार्य है।

एबीएस बुक्स, दिल्ली द्वारा प्रकाशित, केबीएस ऑफसैट प्रिंटर्स, दिल्ली द्वारा मुद्रित

ISBN 978-81-926339-06

Shri ... College Peth

CONSERVATION OF WILD TAXA: PRESENT SCENARIO

EDITORS

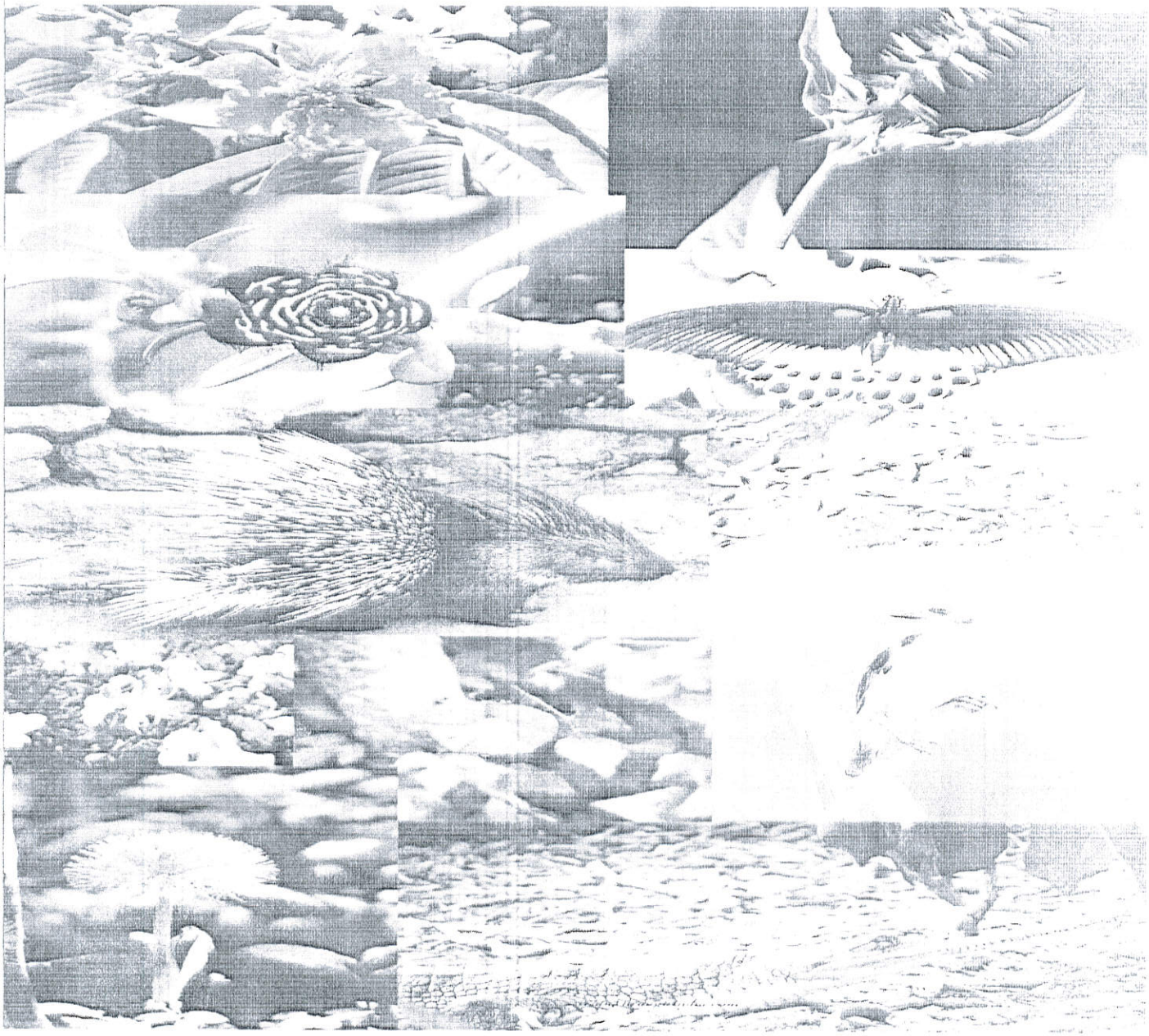

DR. S. V. MADHALE
DR. S. P. DORUGADE
DR. M. V. GOKHALE
DR. M. S. SUTARE
DR. V. M. LAGADE
PROF. N. S. CHAVAN

MEDICINAL PLANTS OF PARBHANI DISTRICT OF MAHARASHTRA STATE, INDIA

Santosh S. Bhosale* and Arvind S. Dhabe**

*Assistant Professor, Department of Botany, Shri. Vijaysinha Yadav Arts and Science College, Peth Vadgaon, Dist. Kolhapur, Maharashtra, India-416112.

** Professor and Head, Department of Botany, Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad, Maharashtra, India-431004.

*** Corresponding Author. E-mail:** santoshsk1106@gmail.com

ABSTRACT:

The investigations of medicinal plants of Parbhani district consists of 439 species of medicinal plants belonging to 100 families, 335 genera, 3 subspecies, 17 varieties and a single form. The dominant families found were Fabaceae (33 spp.) Euphorbiaceae (26 spp.) Asteraceae (23 spp.) Cucurbitaceae (16 spp.) Acanthaceae (14 spp.) Lamiaceae (14 spp.) Apocynaceae (13 spp.) Caesalpiniaceae (13 spp.) Malvaceae (12 spp.), Solanaceae (12 spp.), Amaranthaceae (10 spp.), Covolvulaceae (10 spp.), Asclepiadaceae (nine spp.) Liliaceae (eight spp.) and Verbenaceae (eight spp.) corresponding to 51.25% of the sampled flora. The genera found with greater species richness were: *Euphorbia* (eight spp.), *Phyllanthus* (six spp.), *Ficus* (six spp.), *Solanum* (five spp.), *Capparis* (four spp.), *Citrus* (four spp.), *Acacia* (four spp.) and *Senna* (four spp.). We found 111 spp. of trees, 55 of shrubs, 35 of undershrubs, 42 of twiner climber's and 196 of herbs.

KEYWORDS:

Medicinal plants, Parbhani, Survey.

INTRODUCTION:

The Parbhani district is divided into 9 administrative Sub-units (Tahsils)- Parbhani, Gangakhed, Sonpeth, Pathri, Manwat, Palam, Selu, Jintur, and Purna. Among these Jintur and Gangakhed tahsils covered by moderately dense forests. Parbhani district is botanically explored by Vaidya (1975) 'Some common aquatic plants of North-Western Parbhani District', Vaidya (1976) 'Flora of North- Eastern Parbhani district', Reddy (1986), 'The Flora of Southern Plains of Parbhani District', Naik *et al.* (1998), 'Flora of Marathwada' and Kamble

Resource Inventory and Management

Dr. Balasaheb S. Jadhav

Shri. Vijaysinha Yadav College Peth Vadgaon, Dist. Kolhapur ★ ESTD. 1999

Book Name

Resource Inventory and Management

Editor

Dr. Balasaheb S. Jadhav

Email : balasahebjadhav1969@gmail.com

Published by

PUJA PUBLICATION

6B, Baudh Nagar, Naubasta, Kanpur-208 021

Mob. : 09415909291, 09839991140

Email - pujapublication0512@gmail.com

© Writer

Edition :

Ist Edition : 2020

Price **: 295.00 (Two Hundred Ninty Five Only)**

ISBN : 978-93-83171-48-4

Type Setting

Rudra Graphics, Kanpur

Mob. : 8318971075

Printed by :

Sarthak Printer, Kanpur